

Living the LOTUS

Buddhism in Everyday Life

12
2018

VOL. 159



Founder's Essay

स्वीकार्यता और पश्चाताप परिश्रम करने की दृढ़ता का प्रतीक है

बीते वर्ष की ओर देखकर, आप में से कुछ निराश हो सकते हैं कि हमने उस कार्य का पालन नहीं किया जिसे करने का हमने स्वयं संकल्प लिया था। हालाँकि, हमने कुछ कदम आगे बढ़ाकर ही जान लिया कि संकल्प का कार्यान्वयन कितना मुश्किल है, यद्यपि हमने मन बना लिया था।

जापानी भिक्षु शिनरान यह कहने के लिए प्रसिद्ध है कि "यदि अच्छा व्यक्ति बुद्ध की सुखावति लोक में पुनर्जन्म प्राप्त कर सकता है, तो कितने बुरे आदमी!" लगता है, यह पीछे जाना है। इसका सार्थक अर्थ समझ में आता है, यदि इसे इस तरह कहा जाय:

"क्योंकि बुद्ध अपनी असीम अनुकम्पा और महाकरुणा से सबसे बुरे लोगों का भी उद्धार करते हैं, तो, और भी अधिक बड़ा कारण है कि वे निश्चित रूप से अच्छे व्यक्तियों को मुक्त करायेंगे।"

हालाँकि, यदि कोई गर्व से कहता है कि वे निशान से थोड़ा सा भी अलग नहीं है, तो वे कभी बुद्ध की मुक्ति की आकाँक्षा नहीं करेंगे

और नहीं उनकी धर्मदेशनाओं की गवेषणा कर पायेंगे। जो लोग वास्तव में अपनी कमजोरियों और दोषों से अवगत हैं, वे अनिवार्य रूप से धर्मदेशनाओं की गवेषणा करेंगे। वे लोग हैं जिनके पास यह आत्म-बोध है, वे बुद्ध के सबसे पास हैं।

यदि हम समझते हैं कि हमें दुर्बल और देखते ही गलत आदमी के रूप में जान लेते हैं, तो हम अपने संकल्प का नवीनीकरण कर सकते हैं। यदि यह वर्ष काम नहीं हुआ है, तो मुझे आशा है कि आप मन बनायें और अगले वर्ष बिना किसी चूक के अपना काम पूरा कर लेंगे। यदि आप कर सकते हैं, तो आपकी इच्छा निश्चित रूप से सच साबित होगी। स्वीकार्यता और पछतावा अगर हम अपने आप को कमजोर और आसानी से गलत मनुष्य के रूप में जानते हैं, तो हम अपने संकल्प को नवीनीकृत कर सकते हैं।

From Kaisozuikan 9 (Kosei Publishing Co.),
pp. 128-129

Living the Lotus Vol. 159 (December 2018)

Senior Editor: Koichi Saito
Editor: Eriko Kanao
Copy Editor: Parmita Shekhar

Living the Lotus is published monthly
by Rissso Kosei-kai International,
Fumon Media Center, 2-7-1 Wada,
Suginami-ku, Tokyo 166-8537, Japan.
TEL: +81-3-5341-1124
FAX: +81-3-5341-1224
Email: living.the.lotus.rk-international@kosei-kai.or.jp

रिश्शो कोसेईकाई गृहस्थों की संस्था है जिसका पवित्र ग्रन्थ सद्धर्म पुण्डरीक सूत्र एवं अन्य दो लघु सूत्रों का संकलन है। इस संस्था को संस्थापक निक्क्यो निवानो एवं सह-संस्थापक म्योको नागानुमा ने सन् १९३८ ई० में स्थापित किया था। यह उन साधारण स्त्रियों एवं पुरुषों की संस्था है जिन्हें बुद्ध में श्रद्धाविश्वास है तथा जो बुद्ध के उपदेशों के अनुसार चलते हुए अपने आध्यत्मिक जीवन को समृद्ध बनाते हैं।

प्रेसिडेण्ट का दिशानिर्देश निचिको निवानो, के अन्तर्गत हम देश एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तरों पर अन्य संस्थाओं के साथ मिलकर शान्ति एवं कल्याण के लिये तत्पर होकर परोपकार के कार्य में सलग्न हैं।

"लिविंग द लोटस: बुद्धिज्म इन एवरीडे लाइफ" का उद्देश्य यह दर्शाना है कि जैसे सरोवर के कीचड़ से निकलकर कमल खिलता है वैसे ही पुण्डरीक सूत्र की शिक्षा का दैनिक जीवन में अनुशरण के प्रयास से हमारा जीवन समृद्ध बनता है, हमारा जीना सार्थक होता है। इसका संस्करण के माध्यम से दुनियाँ में लोगों के दैनिक जीवन में बौद्धधर्म की शिक्षा को सरल बोधगम्य बनाना है।

अपने मिशन के प्रति जागरूकता

निचिको निवानो

प्रेसिडेण्ट, रिश्शो कोसेइ काइ



ऐसा व्यक्ति बनना जिसे मार्ग पर चलने में आनन्द है

ताचिबाना आकेमी (1812-68), जो आज के फुकुइ प्रीफेक्चर में पैदा हुए थे और उत्तर एदो काल के एक कवि थे। उन्होंने हमारे लिए कई कवितायें छोड़कर गये हैं, जिनमें दैनिक जीवन की छोटी छोटी घटनायें हँसाती हैं और जिनमें कृतज्ञता का भाव और खुशी लबालब है।

“यह कैसी खुशी है, जब कुछ पत्तों को फैलता है,
मैं अपना ब्रश उठाता हूँ, और बड़ी कुशलता से लिखता हूँ,
जितना मैं उम्मीद कर सकता था।”

“यह कैसी खुशी है / जब मेरी पत्नी और मेरे बच्चे,
शांति में एक दूसरे के साथ, जब उनका सिर झुकता है,
सद्भाव के साथ खाना शुरू करते हैं।”

“यह कैसी खुशी है, जब प्रातः आने को है,
मैं बाहर जाता हूँ और / एक खिला फूल देखता हूँ
वह कल नहीं था।”

उनकी ऐसी कविताओं से जो “यह कैसी खुशी है” से शुरू होती है, हम एक ऐसी मन की शांति का अनुभव कर सकते हैं जो किसी भी परिस्थिति में घटित घटना को कृतज्ञतापूर्वक स्वीकार करता है।

इन आठ महीनों के अन्तराल में, मैंने एक-एक करके आष्टांगिक मार्ग के अंगों का विश्लेषण किया और उनमें से प्रत्येक के अर्थ को समझाया है। इस महीने का विषय, “सम्यक् ध्यान,” आष्टांगिक मार्ग का आठवाँ तथा अन्तिम अंग है।

सम्यक् ध्यान का अर्थ है, क्योंकि आपका मन बुद्ध की धर्मदेशनाओं का शांतिपूर्वक पालन में हमेशा लगा रहता है, इसलिए आप अपने आस-पास के बदलावों से हिलते नहीं हैं। एक अर्थ में, ताचिबाना आकेमी की कविताओं में सही दृष्टि सम्यक् ध्यान का एक उदाहरण है: अर्थात्, यदि आपके पास बहुत कम है तो आप निराश नहीं हों और पूरे मन से सभी परिस्थितियों में खुश रहते हैं।

आपकी खुशी की स्थिति और खुश होने की स्थिति वास्तव में महत्वपूर्ण है, जैसाकि मैंने सम्यक् दृष्टि की मेरी चर्चा में पहले उल्लेख किया है, आष्टांगिक मार्ग के प्रथम अंग के विषय, जब मैंने इस न्यूजलेटर के मई अंक में लिखा था कि सही विचार से चीजों को देखना एक तरीका है जिससे “आपकी भावनाओं को आसानी से रखता है।” इसके अलावा, कन्फ्यूशियस के एनालेक्ट्स से उद्धरण के अनुसार “जो इसे जानता है, वह इसे पसंद करता है; और जो इसे





बोधिसत्त्व की आकांक्षा

संयोग से, चीनी कैरेक्टर '正' का अर्थ 'सही/सम्यक', है, जो आष्टांगिक मार्ग के प्रत्येक अंगों में है। '正' दो कैरेक्टर से बना है: शीर्ष में '一' अंक 'एक' को इंगित करता है, और नीचे '止' क्रिया लर "स्थिर रहना" का द्योतक है। बौद्ध धर्म में निश्चित रूप से, एक सत्य और धर्म को इंगित करता है। आष्टांगिक मार्ग का प्रत्येक अंग हमें, "सत्य के साथ स्थिर रहने" का बोध कराता है और ऐसा करने का आधार इनमें से प्रथम अंग, सम्यक दृष्टि है। इस अर्थ में, मुझे लगता है कि यह महत्वपूर्ण है, जो लोग कहते हैं कि हर दिन के दैनिक चर्या के क्रम में सभी आठवें अंग का अभ्यास करना बहुत कठिन है, वे स्वयं के सम्बन्ध मनन चिन्तन करने की आदत बनालें और सम्यक दृष्टि पर केन्द्रित रहें।

विशेष रूप से, जब चीजें मार्ग में बाधा है या आपके हृदय में दर्द है, यदि आप अपनी आँखों के सामने होने वाली घटना को सही ढंग से देखते हैं, जिसका अर्थ है "एक" पर लौटना, जो सच है - आप समझने में सक्षम होंगे कि क्या आपके मन को परेशान कर रहा है और कैसे आप अपनी भावनाओं को सहजता से कैसे रख सकते हैं ?

लोगों का समूह जो साथ मिलकर जीवन के उस मार्ग की गवेषणा में है, जो सत्य के अनुरूप है, उस समूह को, बौद्ध धर्म में, "मार्ग की गवेषणा में लगे लोगों की सभा" कहा जाता है (जापानी में "सम्यक ध्यान में लीन लोगों की सभा")। स्पष्ट कहें तो वे वैसे लोग हैं जिन्हें "बुद्ध बनने की दृढ़ आकांक्षा है" और इस वर्णन से हम सम्यक ध्यान के अर्थ को और अधिक गहराई से समझ सकते हैं।

बुद्ध की तरह चीजों को देखकर सही देखना सम्यक दृष्टि है, आपका मन परिशुद्ध प्रशांत होता है, जो सम्यक ध्यान है, जो बोधिसत्त्व की आकांक्षा के अनुसार जीवन जीना और दूसरों को दुःख दर्द से मुक्ति दिलाना तथा उनकी मदद करना है।

हालाँकि, इस तरह के संकल्प को आगे बढ़ाने की विधि निश्चित रूप से "सम्यक दृष्टि" तक ही सीमित नहीं है। आठ विशिष्ट गुणों के रूप में आष्टांगिक मार्ग की प्रस्तुति शाक्यमुनि की दयालुता है जिसमें हर तरह के व्यक्ति के ग्रहण की क्षमता के अनुरूप धर्मदेशना के उपदेश का प्रदर्शन है।

हम सभी एक दूसरे को जीने के लिए प्रेरित कर रहे हैं। मुझे आशा है कि अस्तित्व की इस स्थिति में, हमने बुद्ध की धर्मदेशनाओं के माध्यम से मानवता के लिए उपयुक्त जीवनशैली के माध्यम से सीखा है। हमारा बुद्ध मार्ग पर चलना जारी रखेगा और जितने लोगों को संभव है, उनको हम बुद्ध स्वभाव से परिचित कराने के अपने मिशन को पूरा करेंगे।

From Kosei, December 2018.



समेकित त्रिविध पुण्डरीक सूत्रः

प्रत्येक अध्याय का सारांश एवं मुख्य बिन्दुयें

सद्धर्मपुण्डरीक सूत्र

अध्याय 3: एक दृष्टान्त (2)

बाहरी शक्ति या अपने अन्दर की शक्ति

उदाहरण के लिए, एक और बिंदु, जिस पर ध्यान देना चाहिए, वह है बृद्ध पुरुष का अपनी शारीरिक शक्ति और मनोबल के सहारे ऐसा सोचना कि बच्चों को किसी प्रकार के बॉक्स में बैठाकर स्वयं बाहर निकाल लेगा। लेकिन फिर महसूस किया कि यह प्रयास निरर्थक सिद्ध हो सकता है, जब तक कि वे स्वयं बाहर निकलने के लिए तैयार नहीं होते हैं।

यह संकेत देते हैं कि बाहरी शक्ति से या अपने अन्दर की शक्ति से मुक्त होना कितना अलग है। जीवित प्राणियों को कुछ बताये बिना ही सांसारिक दुःख तकलीफ से बाहर निकाल लाना बाहरी शक्ति द्वारा मुक्त होना है। लेकिन, अपनी आँखों के सामने की वस्तुओं के आनन्दोल्लास में खोये हुये, गिरकर समाप्त हो जायेंगे, या, दृष्टान्त के अनुसार, बच्चों ने महसूस किया कि उनको जलते हुए घर के व्यापक क्षेत्र में खेलने को तरजीह देना चाहिए बजाए उनके बचाव के लिए तैयार सीमित बॉक्स के। यह शायद गलत है, उन्हें स्वयं बोध हुआ। फिर भी, एक बार जलते महल से बाहर निकल आने के बाद भी, उन्हें अन्दर का माहौल अधिक मनोरंजक लगे और वे फिर लौटना चाहें।

इस बिंदु पर बृद्ध पुरुष ने, जो बुद्ध के प्रतीक हैं, उनके लिए किसी तरह से अपनी शक्ति से अपने आपको संरक्षित कर लेने के उपाय का निर्धारण किया। इससे कोई अन्तर नहीं आता कि उन्हें बाहर निकालने के लिए किस उपाय का उपयोग किया जाता है। एक छागल गाड़ी चाहता है, एक हिरण गाड़ी, और एक उषभ गाड़ी। महत्वपूर्ण बात यह है कि वे स्वयं अपने आप निकल बाहर आ गये और वे फिर से वापस नहीं जायेंगे, जबतक कि कोई असामान्य घटना घटित नहीं होती है। विश्वास ऐसा होना चाहिए। यदि लोग केवल देवताओं या बुद्धों का आह्वान उनसे कुछ पाने के लिए करते हैं, उनकी सच्ची मुक्ति तक पहुँचने की संभावना नहीं है, क्योंकि उनमें अपने मन और सोच में सुधार लाने की इच्छा और प्रयास की कमी है, जो उनको अपने आचरण शुद्ध करने में बाधक होगा। व्यक्तिगत अभ्यास के माध्यम से अपने चरित्र को परिपूर्ण करना ही किसी के सच्ची मुक्ति पाने का मार्ग है।

लेकिन इस तरह के अभ्यास का अंतिम लक्ष्य छोटी आत्मा या

अहंकार से दूर करना, और बुद्ध के महा अनुकम्पामय मन के साथ सामंजस्य बैठाने के लिए सार्वभौम सत्य को स्वीकारना है। इसलिए मैं चाहता हूँ कि आप जाने कि अन्दर की शक्ति इस अर्थ में हमारी अपनी नहीं है जो हमसे बुलवाता है, "हमने यह किया।"

विश्वास जो अन्दर की शक्ति से आता है, वह अपनी इच्छा और प्रयास से बुद्ध की शरण में जाने के अलावा कुछ और नहीं है। इसलिए यह हमारे अन्दर की शक्ति बाहर की शक्ति है और बाहर की शक्ति, अन्दर की शक्ति है। अन्यथा, मुक्ति की प्राप्ति नहीं है। ये सब दृष्टान्त में बृद्ध पुरुष की कार्रवाई द्वारा दर्शाया गया है।





निस्स्वार्थ निःस्वार्थ चलो

अब हम एक संकीर्ण दरवाजे के विषय पर आते हैं, जिसका महत्व मन और सोच की महान क्रांति है, अर्थात् अहंकारी मन का त्याग करना है। जहाँ साधारण लोग के लिए इसमें भयंकर कठिनाइयाँ हैं, जो संकीर्ण द्वार का प्रतीक है।

अहंकार को त्यागना कई चरणों में होता है। पहला चरण सरल सत्य, या सिद्धान्त के प्रति जागरूकता है। लोगों के दुःख तकलीफ उनके लालच तथा इच्छा की प्रगाढ़ता के कारण है, जो अहंकार उत्पन्न करता है। अकेले इसका अहसास स्वयं अहं से दूर जाने का एक महत्वपूर्ण कदम का प्रतिनिधित्व करता है, लेकिन यह पर्याप्त नहीं है अगर कोई इस सिद्धान्त के बारे में नहीं जानता कि अहं कैसे उत्पन्न होता है।

दूसरे चरण में यह अहसास होना चाहिए कि प्रतित्य समुत्पाद के अनुसार हम जो कुछ भी तत्काल चाहते हैं और जिससे जुड़े हुए हैं, वह एक अस्थायी रूप है और जो कारण और प्रत्यय (परिस्थितियों) के योग से एक रूप में आया है। इसके अलावा, यह देखा जाना चाहिए कि बारह कारणों और प्रत्यय के सिद्धान्त के अनुसार इन इच्छाओं की उत्पत्ति का कारण अज्ञान है, एक मूल गलत सोच है कि मांस स्वयं में है।

जब कोई इस सिद्धान्त को समझता है, उसे स्पष्ट हो जाता है कि जिस वस्तु के प्रति आसक्त है, वह वास्तव में वास्तविक पदार्थ नहीं है, और परिणाम स्वरूप वह स्वयं को आत्मकेन्द्रित सोच से स्वयं को दूर कर लेता है।

इसके अलावा, आगे के अभ्यास के साथ, कोई इस सत्य को समझ सकता है कि इस विश्व में सभी प्राणी बराबर हैं और वे सद्भाव से अस्तित्व में हैं, और इस अहसास के साथ कोई भी एकता की भावना का पूर्ण स्वाद ले सकता है कि सभी भाई भाई हैं, सभी में समान रूप से बौद्ध स्वभाव है और विश्व के महा जीवन का भाग बना है। जब कोई यहाँ तक पहुँच जाता है, तो अहंकार गायब हो जाता है।



तीन गुणः सार्वभौमता, शिक्षित करने की क्षमता, सन्तति बढ़ाने की क्षमता

सम्पूर्ण बौद्ध सूत्रों में सबसे प्रशंसनीय और बहुचर्चित गाथाओं में से एक इस अध्याय में है।

अब ये तीन गुण मेरा पूर्ण क्षेत्र है,
और इसके सभी प्राणी मेरे बच्चे हैं,
यह आपदाओं और परेशानियों से भरा है,
मैं ही उनको बचाने और संरक्षण देने में सक्षम हूँ।

विश्व के पदार्थ बुद्ध के हैं, सभी लोग उनके बच्चे हैं, और वे अकेले उन्हें उनके दुःखों और परेशानियों से मुक्त करा सकते हैं—यही उपरोक्त गाथा का अर्थ है।

लेकिन यह नहीं तो विश्व पर निजी स्वामित्व का दावा है और नहीं यह दावा है कि वे अकेले ही मुक्त करा सकते हैं। बुद्ध का यहाँ कहना है कि चूँकि सभी लोगों में बुद्ध स्वभाव निहित है। इसलिए वे सभी लोगों को इसका बोध कराते हैं और अपने समान ही बोधिज्ञान की प्राप्ति की ओर प्रवृत्त कराते हैं। जैसाकि उनके सेट निचरेन भी इस गाथा से व्युत्पन्न है, अर्थात् तीन गुणों से—सार्वभौमता, गुरु का होना, तथा माता पिता, और शाक्यमुनि के गुणों को नमन करते हैं। सार्वभौमता का गुण सभी जीवित प्राणियों का संरक्षण करने को



भाई या हमारी बहनें हैं। इस प्रकार, माता-पिता या भाई बहन के रूप में, हम स्वयं उस जीवन की सेवा में हैं। यह महान सत्य, करुणा है। यह बन्धुत्व के बन्धन के अलावा अन्य कुछ नहीं है।

ये, कुछ ऐसी शिक्षायें हैं जिन्हें इस अध्याय में केवल सुझाव के रूप में दिया गया है। केवल सुझाव के रूप में दिया जाने का कारण है कि सीधे शिक्षा का उपदेश करने से उपस्थिति लोगों की समझ में नहीं आयेगा। यही कारण है कि शाक्यमुनि ने धैर्यपूर्वक अपनी लंबी व्याख्या जारी रखी। वे जानते हैं कि सुझाव के द्वारा बुआई के बीज कुछ समय बाद अंकुरित हो जायेंगे, और इसलिए उन्होंने व्याख्या जारी रखी।

दर्शाता है। गुरु का गुण सभी लोगों को परामर्श देना है और मातापिता का गुण सभी जीवित प्राणियों के प्रति स्नेहभरा दयाभाव है। इसके अलावा, अपने गहरे चिंतन और विभिन्न आध्यात्मिक अनुभवों के माध्यम से, उन्होंने हमें अपनी जागरूकता के रूप में सिखाया है कि पुण्डरीक सूत्र का वास्तव में अनुकरण करनेवालों में ये तीन गुण होते हैं।

इस कविता को सकारात्मक तरीके से व्याख्या भी की जा सकती है।

अगर हम वास्तव में अपने स्वार्थपरक हठधर्मी को दूर कर सकते हैं, तो हम निश्चित रूप से सभी चीजों में समर्थन पाने में सफल होंगे। यदि हम अपने आप को देख सकते हैं कि हमें सभी चीजों से जीवन मिला है, यानी, संपूर्ण विश्व से, हमारा मन तत्क्षण विश्व में कहीं भी जा सकता है, और इस प्रकार विश्व हमारा है के अर्थ को हम समझ सकते हैं।

इस तरह से मन वास्तव में मुक्त हो जाता है। हम किसी भी चीज से बाधित नहीं होते हैं, और, जैसा भी हम करते हैं, हम हमेशा सत्य (सद्ध धर्म) के अनुरूप रहते हैं, और हमारे कार्य हमें स्वयं को और सभी लोगों को जीवन देते हैं।

जब विश्व हमारा है, तो उसमें रहने वाले सभी जीवन स्वयं इसका एक हिस्सा है, और सभी जीवित प्राणी हमारे बच्चे, हमारे

दिसम्बर वह महीना है जब लोग वर्ष का अन्त होते देखते हैं। हालाँकि, रिश्शो कोसेइ-काइ के लिए दिसंबर भी प्रारंभ करने का एक महीना है, जब हम अपने मिशन के प्रति सजग रह कर नयी धार्मिक गतिविधियों का प्रारंभ करते हैं।

इसलिए यही समय है जब प्रेसिडेण्ट निवानो का इस महीने के लिए संदेश, "अपने मिशन के प्रति जागरूक रहना" प्रस्तुत है। मई से, हमने प्रत्येक महीने आष्टांगिक मार्ग के एक अंग का अध्ययन किया है। इस महीने के संदेश में, अन्तिम आठवाँ अंग, सम्यक ध्यान के विषय प्रेसिडेण्ट निवानो ने अपने आगे आने वाली हर चीज में आनंद लेने के महत्व की पुष्टि की है। इसके अलावा, उन्होंने हमें बोधिसत्त्व की आकांक्षा करने और बुद्ध मार्ग पर एक कदम आगे बढ़ाने के लिए कहते हैं।

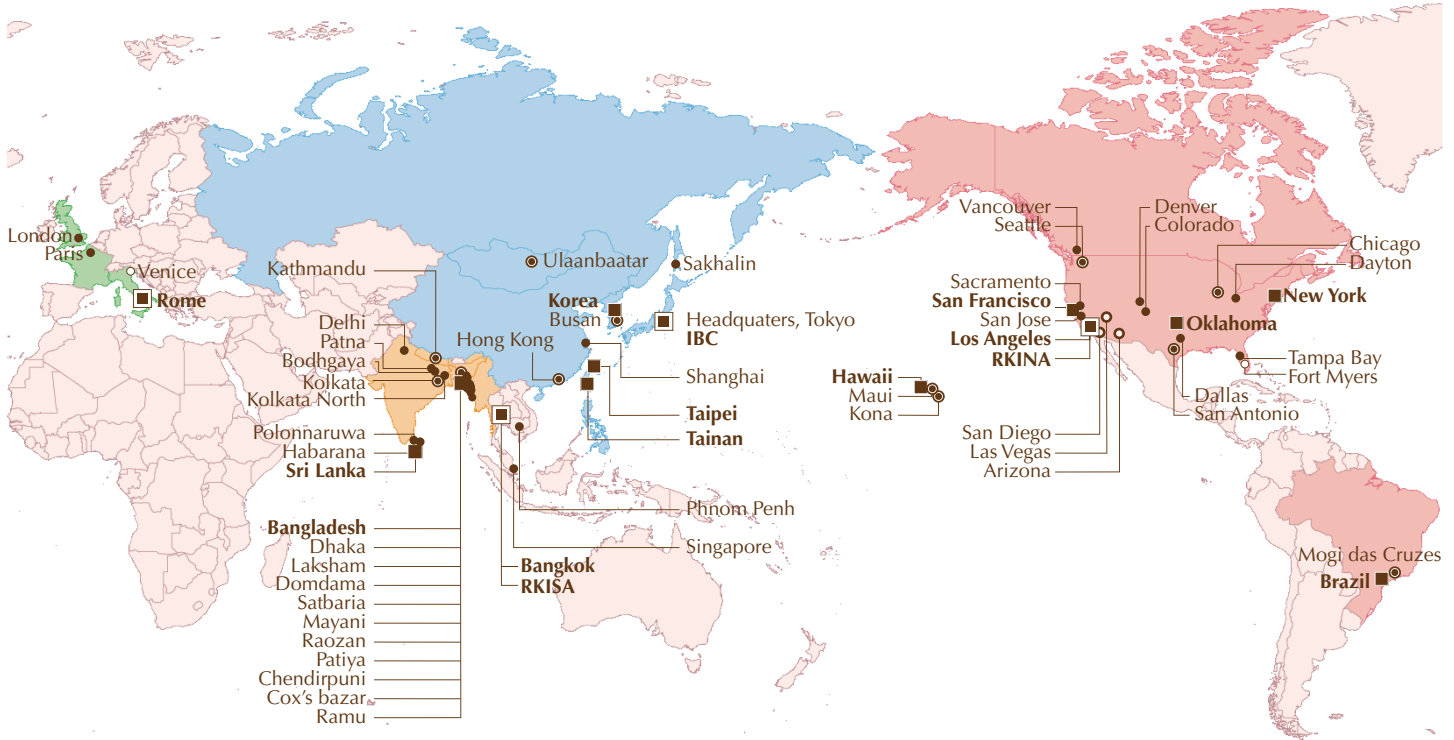
जब मुझे महा पावन हॉल की वेदी पर अनुष्ठान करने का भार सौंपा गया, तो मुझे सिखाया गया कि "सब कुछ सम्मान के साथ शुरू और समाप्त होता है, या प्रार्थना में हथेलियों को जोड़ कर रखने का अभ्यास।" आदर सम्मान के पूर्ण अभ्यास के माध्यम से, मैं दिल में कृतज्ञता का भाव भरने के अलावा और कुछ नहीं सीखा।

अगले वर्ष, रिश्शो कोसेइ-काइ संयुक्त राज्य अमेरिका में धर्म प्रचार प्रसार का साठवाँ वर्षगाँठ मनायेंगे, जिसका अर्थ संगठन के आधिकारिक अंतर्राष्ट्रीय प्रचार प्रसार के शुरुआत की साठवाँ वर्षगाँठ है। मुझे आशा है कि हम अपने मिशन के प्रति जागरित होंगे और संसार भर के लोगों के साथ अपूर्व धर्मशिक्षा को साझा करेंगे, धर्मशिक्षा का खुशी से और सहजता से पालन करने का प्रयास करेंगे, और प्रार्थना में हमेशा हथेलियों को जोड़े रखना मन में बसाकर रखेंगे।

रेवरेन्ट कोईची साइतो
निदेशक, रिश्शो कोसेइ काइ इन्टरनेशनल



Rissho Kosei-kai: A Global Buddhist Movement



Rissho Kosei-kai International

Fumon Media Center 3F, 2-7-1 Wada, Suginami-ku, Tokyo, Japan
 Tel: 81-3-5341-1124 Fax: 81-3-5341-1224
 e-mail: living.the.lotus.rk-international@kosei-kai.or.jp

Rissho Kosei-kai International of North America (RKINA)

2707 East First Street, Suite #1, Los Angeles, CA 90033, U.S.A.
 Tel: 1-323-262-4430 Fax: 1-323-262-4437
 e-mail: info@rkina.org <http://www.rkina.org>

Branch under RKINA

Rissho Kosei-kai of Seattle's Buddhist Learning Center

28621 Pacific Highway South, Federal Way, WA 98003 U.S.A.
 Tel: 1-253-945-0024 Fax: 1-253-945-0261
 e-mail: rkseattlewashington@gmail.com
<http://buddhistlearningcenter.org/>

Rissho Kosei-kai Buddhist Center of San Antonio

6083 Babcock Road, San Antonio, TX 78240, U.S.A.
 P.O. Box 692148, San Antonio, TX 78269, U.S.A.
 Tel: 1-210-561-7991 Fax: 1-210-696-7745
 e-mail: dharmasanantonio@gmail.com
<http://www.rkina.org/sanantonio.html>

Rissho Kosei-kai of Tampa Bay

2470 Nursery Road, Clearwater, FL 33764, U.S.A.
 Tel: (727) 560-2927 e-mail: rktampabay@yahoo.com
<http://www.buddhismtampabay.org/>

Rissho Kosei-kai of Vancouver

Rissho Kosei-kai Buddhist Church of Hawaii

2280 Auhuhu Street, Pearl City, HI 96782, U.S.A.
 Tel: 1-808-455-3212 Fax: 1-808-455-4633
 e-mail: info@rkhawaii.org <http://www.rkhawaii.org>

Rissho Kosei-kai Maui Dharma Center

1817 Nani Street, Wailuku, HI 96793, U.S.A.
 Tel: 1-808-242-6175 Fax: 1-808-244-4625

Rissho Kosei-kai Kona Dharma Center

73-4592 Mamalahoa Highway, Kailua-Kona, HI 96740 U.S.A.
 Tel: 1-808-325-0015 Fax: 1-808-333-5537

Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Los Angeles

2707 East First Street, Los Angeles, CA 90033, U.S.A.
 Tel: 1-323-269-4741 Fax: 1-323-269-4567
 e-mail: rk-la@sbcglobal.net <http://www.rkina.org/losangeles.html>

Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Arizona

Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Colorado
 Rissho Kosei-kai Buddhist Center of San Diego
 Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Las Vegas
 Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Dallas

Rissho Kosei-kai of San Francisco

1031 Valencia Way, Pacifica, CA 94044, U.S.A.
 Tel: 1-650-359-6951 Fax: 1-650-359-6437
 e-mail: info@rksf.org <http://www.rksf.org>

Rissho Kosei-kai of Sacramento

Rissho Kosei-kai of San Jose

Rissho Kosei-kai of New York

320 East 39th Street, New York, NY 10016 U.S.A.
 Tel: 1-212-867-5677 Fax: 1-212-697-6499
 e-mail: rkny39@gmail.com <http://rk-ny.org/>

Rissho Kosei-kai of Chicago

1 West Euclid Ave., Mt. Prospect, IL 60056 U.S.A.
 Tel: 1-773-842-5654 e-mail: murakami4838@aol.com
<http://rkchi.org/>

Rissho Kosei-kai of Fort Myers

<http://www.rkftmyersbuddhism.org/>

Rissho Kosei-kai Dharma Center of Oklahoma

2745 N.W. 40th Street, Oklahoma City, OK 73112 U.S.A.
 Tel: 1-405-943-5030 Fax: 1-405-943-5303
 e-mail: rkokdc@gmail.com <http://www.rkok-dharmacenter.org>

Rissho Kosei-kai Dharma Center of Denver

1255 Galapago Street, #809 Denver, CO 80204 U.S.A.
 Tel: 1-303-446-0792

Rissho Kosei-kai Dharma Center of Dayton

425 Patterson Road, Dayton, OH 45419 U.S.A.
<http://www.rkina-dayton.com/>

Rissho Kosei-kai do Brasil

Rua Dr. José Estefno 40, Vila Mariana, São Paulo-SP,
 CEP 04116-060 Brasil
 Tel: 55-11-5549-4446 / 55-11-5573-8377 Fax: 55-11-5549-4304
 e-mail: rissho@terra.com.br <http://www.rkk.org.br>

Rissho Kosei-kai de Mogi das Cruzes

Av. Ipiranga 1575-Ap 1, Mogi das Cruzes-SP,
 CEP 08730-000 Brasil
 Tel: 55-11-5549-4446 / 55-11-5573-8377

Rissho Kosei-kai of Taipei

4F, No. 10 Hengyang Road, Zhongheng District,
Taipei City 100, Taiwan

Tel: 886-2-2381-1632 Fax: 886-2-2331-3433
<http://kosei-kai.blogspot.com/>

Rissho Kosei-kai of Tainan

No. 45, Chongming 23rd Street, East District,
Tainan City 701, Taiwan

Tel: 886-6-289-1478 Fax: 886-6-289-1488

Korean Rissho Kosei-kai

6-3, 8 gil Hannamdaero Yongsan gu, Seoul, 04420,
Republic of Korea

Tel: 82-2-796-5571 Fax: 82-2-796-1696
e-mail: krkk1125@hotmail.com

Korean Rissho Kosei-kai of Busan

3F, 174 Suyoung ro, Nam gu, Busan, 48460, Republic of Korea

Tel: 82-51-643-5571 Fax: 82-51-643-5572

International Buddhist Congregation (IBC)

Fumon Media Center 3F, 2-7-1 Wada, Suginami-ku, Tokyo, Japan

Tel: 81-3-5341-1230 Fax: 81-3-5341-1224

e-mail: ibcrk@kosei-kai.or.jp <http://www.ibrk.or.jp/>

Branches under the Headquarters**Rissho Kosei-kai of Hong Kong**

Flat D, 5/F, Kiu Hing Mansion, 14 King's Road,
North Point, Hong Kong, Republic of China

Rissho Kosei-kai of Ulaanbaatar

15F Express tower, Peace avenue, khoroo-1, Chingeltei district,
Ulaanbaatar 15160, Mongolia

Tel: 976-70006960 *e-mail:* rkkmongolia@yahoo.co.jp

Rissho Kosei-kai of Sakhalin

4 Gruzinski Alley, Yuzhno-Sakhalinsk
693005, Russian Federation

Tel & Fax: 7-4242-77-05-14

Rissho Kosei-kai Friends in Shanghai**Rissho Kosei-kai of South Asia Division**

201 Soi 15/1, Praram 9 Road, Bangkapi, Huaykhwang
Bangkok 10310, Thailand

Tel: 66-2-716-8141 Fax: 66-2-716-8218

Rissho Kosei-kai International of South Asia (RKISA)

201 Soi 15/1, Praram 9 Road, Bangkapi, Huaykhwang
Bangkok 10310, Thailand

Tel: 66-2-716-8141 Fax: 66-2-716-8218

e-mail: thairissho@csloxinfo.com

Branches under the South Asia Division**Rissho Kosei-kai of Delhi**

77 Basement D.D.A. Site No. 1, New Rajinder Nagar,
New Delhi 110060, India

Rissho Kosei-kai of Kolkata

E-243 B. P. Township, P. O. Panchasayar, Kolkata 700094,
West Bengal, India

Rissho Kosei-kai of Kolkata North

AE/D/12 Arjunpur East, Teghoria, Kolkata 700059,
West Bengal, India

Rissho Kosei-kai of Bodhgaya

Ambedkar Nagar, West Police Line Road
Rumpur, Gaya-823001, Bihar, India

Rissho Kosei-kai of Kathmandu

Ward No. 3, Jhamsilhel, Sancepa-1, Lalitpur, Kathmandu,
Nepal

Rissho Kosei-kai of Phnom Penh

#201E2, St 128, Sangkat Mittapheap, Khan 7 Makara,
Phnom Penh, Cambodia

Rissho Kosei-kai of Patna**Rissho Kosei-kai of Singapore****Thai Rissho Friendship Foundation**

201 Soi 15/1, Praram 9 Road, Bangkapi, Huaykhwang
Bangkok 10310, Thailand

Tel: 66-2-716-8141 Fax: 66-2-716-8218

e-mail: info.thairissho@gmail.com

Rissho Kosei-kai of Bangladesh

85/A Chanmari Road, Lalkhan Bazar, Chittagong, Bangladesh

Tel & Fax: 880-31-626575

Rissho Kosei-kai of Dhaka

House#408/8, Road#7(West), D.O.H.S Baridhara,
Dhaka Cant.-1206, Bangladesh

Tel & Fax: 880-2-8413855

Rissho Kosei-kai of Mayani

Mayani(Barua Para), Post Office: Abutorab, Police Station:
Mirshari, District: Chittagong, Bangladesh

Rissho Kosei-kai of Patiya

Patiya, sadar, Patiya, Chittagong, Bangladesh

Rissho Kosei-kai of Domdama

Domdama, Mirsarai, Chittagong, Bangladesh

Rissho Kosei-kai of Cox's Bazar

Ume Burmese Market, Main Road Teck Para, Cox'sbazar,
Bangladesh

Rissho Kosei-kai of Satbaria

Satbaria, Hajirpara, Chandanish, Chittagong, Bangladesh

Rissho Kosei-kai of Laksham

Dupchar (West Para), Bhora Jatgat pur, Laksham, Comilla,
Bangladesh

Rissho Kosei-kai of Raozan

West Raozan, Ramjan Ali Hat, Raozan, Chittagong, Bangladesh

Rissho Kosei-kai of Chendirpuni

Chendirpuni, Adhunagor, Lohagara, Chittagong, Bangladesh

Rissho Kosei-kai of Ramu**Rissho Kosei Dhamma Foundation, Sri Lanka**

No. 628-A, Station Road, Hunupitiya, Wattala, Sri Lanka

Tel: 94-11-2982406 Fax: 94-11-2982405

Rissho Kosei-kai of Habarana

151, Damulla Road, Habarana, Sri Lanka

Rissho Kosei-kai of Polonnaruwa**Branches under the Headquarters****Rissho Kosei-kai di Roma**

Via Torino, 29-00184 Roma, Italia

Tel & Fax: 39-06-48913949 *e-mail:* roma@rk-euro.org

Rissho Kosei-kai of the UK**Rissho Kosei-kai of Venezia****Rissho Kosei-kai of Paris**